समाज्ञा
हिन्दी दैनिक
5 September, 2019

नी रिप्लेसमेंट से मिलेगा घुटने के दर्द से छुटकारा : डॉ. संतोष कुमार

मेरा घुटना मेरा जीवन-विश्वस्तरीय नी रिप्लेसमेंट सर्जरी

घुटनों के दर्द का मूल कारण अर्थराइटिस है, जिसकी वजह से घुटनों में दर्द के साथ ही सूजन भी देखने को मिलते हैं। इतना ही नहीं चलने फिरने में भी असुविधा होती है और समस्याग्रस्त मरीज ठीक से कोई काम भी नहीं कर पाता है। आहिस्ते-आहिस्ते मरीज में आत्मविश्वास की कमी देखी जाती है। वर्तमान में अर्थराइटिस की समस्या से तकरीबन 25 करोड़ भारतीय पीड़ित हैं। हालांकि सबसे पहले फिजिकल थेरेपी व दवाओं की मदद से वजन कम करने की कोशिश की जाती है। लेकिन अगर मरीज एडवांस नी अर्थराइटिस से पीड़ित है तो घुटना प्रत्यारोपण ही एक मात्र उपाय है। वहीं घुटना प्रत्यारोपण का नाम सुनते ही अधिकतर लोग घबड़ा जाते हैं। उन्हें लगता है कि सर्जरी कराने के बाद स्थिति और भी खराब हो जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि सर्जरी को समझने की जरूरत है। ऐसे में घुटना सर्जरी व प्रत्यारोपण से जुड़े तमाम सवालों के साथ समाज्ञा संवाददाता ने मशहूर आर्थोपेडिक व ज्वाइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. संतोष कुमार से खास बातचीत की।

जानकारी दे रहे हैं विख्यात आर्थोपेडिक एवं जॉयेंट सर्जन डॉ. संतोष कुमार

DR. SANTOSH KUMAR
Consultant Orthopaedic & Joint Replacement Surgeon
HEAD, Institute of Computer Assisted Joint Replacement Surgery
Belle Vue Clinic

पेश है बातचीत के खास अंश

सवाल : किन लोगों को घुटना प्रत्यारोपण सर्जरी की आवश्यकता है?

जवाब : जिनको एडवांस नी अर्थराइटिस की समस्या है। उन्हें घुटना प्रत्यारोपण सर्जरी की जरूरत होती है। इस समस्या से ग्रसित मरीज को सामाजिक व रोजमर्रा के कामों को करने में काफी परेशानी होती है। सीढ़ियों पर चढ़ना, कुछ भी काम करने पर दर्द का महसूस होना, इसके लक्षण है। ऐसे में नी रिप्लेसमेंट सर्जरी के जरिए उक्त समस्या का निदान संभव है।

सवाल : सर्जरी के बाद सफलता की क्या गुंजाइश है ?

जवाब : चिकित्सा विज्ञान में यह सर्जरी ज्यादातर सफल ही होती है। मैं बहुत सालों से नियमित रूप से इस क्षेत्र से जुड़ा हूं। आज कल इस सर्जरी में कंप्यूटर असिस्टेड टेक्निक का इस्तेमाल किया जाता है। जिसकी वजह से यह सर्जरी और भी आसान हो गई है। इस सर्जरी के बाद मरीज अपने सामान्य जीवन में जल्द ही वापस आ जाता है। मरीज सर्जरी के दिन ही चलना शुरू कर देते हैं और तीन दिन के बाद घर वापस जा सकते हैं। सर्जरी के अगले दिन ही टॉयलेट जाना व दो दिनों के बाद धीरे-धीरे सीढ़ी भी चढ़ सकते हैं। इस सर्जरी के बाद मरीज अपने दैनिक काम बिना किसी परेशानी के कर सकते हैं।

सवाल : इस क्षेत्र में कंप्यूटर असिस्टेड टेक्निक की क्या भूमिका है ?

जवाब : नी रिप्लेसमेंट के क्षेत्र में कंप्यूटर असिस्टेड टेक्निक बहुत ही अविश्वसनीय तरीके से काम करती है। इस सर्जरी के बाद किसी तरह की कोई चिंता नहीं होती है।

सवाल : क्या डायबिटीज के मरीजों का नी रिप्लेसमेंट सर्जरी किया जा सकता है ?

जवाब : हां जरूर, डायबिटीज मरीजों का भी ऑपरेशन किया जा सकता है लेकिन ऑपरेशन से पहले व बाद में विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। वहीं पेसमेकर या बाईपास सर्जरी या फिर किडनी समस्या से ग्रस्त मरीजों की भी नी रिप्लेसमेंट किया जा सकता है। हम मरीज के भर्ती से पहले ही उसकी सभी तरह के जांच कर लेते हैं। इसके साथ ही चिकित्सा के दौरान सामने आने वाली किसी भी परेशानी का सामना करने के लिए अलग से एक मेडिकल टीम होती है।

सवाल : महिला का घुटना क्या पुरुषों के घुटनों से अलग है ?

जवाब : जी, हां महिलाओं का घुटना पुरुषों के मुकाबले थोड़ा पतला होता है। इसके साथ ही महिलाओं के घुटनों के लिए एक विशेष इम्प्लीमेंट की व्यवस्था की गई है।

सवाल : घुटने के लिए सबसे अच्छी ब्रैंड कौन सी है ?

जवाब : इस क्षेत्र में सर्वोच्च ब्रैंड बोलकर जैसा कुछ भी नहीं है। यह समझना जरूरी है कि सर्जरी किस तरह से की जा रही है, नतीजा उसपर निर्भर करता है, ब्रैंड पर नहीं।

सवाल : इस सर्जरी के बाद मरीज कितना काम कर सकता है ?

जवाब : देखिए, इस सर्जरी के बाद बिना किसी दर्द के चल फिर सकते हैं, सीढ़ियों पर चढ़ने व उतरने में भी किसी प्रकार की समस्या नहीं होती है। इतना ही नहीं आप गाड़ी व साइकिल के साथ ही ट्रैकिंग भी कर सकते हैं। इसके अलावा समुद्र में भी जा सकते हैं। हां, इस सर्जरी के बाद मरीज भारतीय टॉयलेट का इस्तेमाल नहीं कर सकता है और न ही जमीन पर चौकड़ी मार कर बैठ सकते हैं।

सवाल : मरीज इम्प्लान्ट के बाद कितने दिन तक बिना किसी परेशानी के जी सकता है ?

जवाब : देखिए यह तो सर्जरी के ऊपर इम्प्लान्ट की आयु निर्भर करती है। सिमेंटिंग पद्धति व इम्प्लान्ट के मेटेरियल के ऊपर आयु काल निर्धारित है। मेरी कोशिश होती है कि बेहतर व नए तरीके से सर्जरी को किया जाए, ताकि व्यक्ति पूरे जीवन को आसानी व पीड़ा रहित तरीके से जी सकें।

सवाल : हाई फ्लैक्शन नी क्या है ?

जवाब : हमारे समाज में घुटनों को मोड़ कर बैठना यानी नी बेन्डिंग को खराब माना जाता है। विशेष रूप से किसी धार्मिक कार्यक्रम में बैठने के लिए 145 डिग्री मूवमेंट की जरूरत होती है। इस सर्जरी के बाद मरीज केवल 90 डिग्री ही अपने घुटनों को मोड़ सकता है। हाई फ्लैक्शन नी इस्तेमाल करने के बाद नी बेंडिंग थोड़ा ज्यादा किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
98319 11584
98312 66632
email : santdr@gmail.com
SMS POORVA TO 56161
DR. SANTOSH KUMAR KNEE FOUNDATION
Plot 236, Laketown, Block-B
Near East Calcutta Girls Collage
www.poorvaortho.tv
www.mykneemylife.org
www.poorvaorthopedicfoundation.org
Follow : Facebook.com/poorvaorthopedic